[This question paper contains 6 printed pages.]

253 *आपका अनुक्रमांक* _____

B.A. (Programme) / I Sem. **B**

(L)

HINDI DISCIPLINE – Paper A

हिन्दी अनुशासन – प्रश्नपत्र A

कथा एवं संस्मरण साहित्य

(प्रवेशवर्ष 2011 और तत्पश्चात्)

समय : 3 घण्टे *पूर्णांक : 75*

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी *प्रश्न कीजिए।*

1. हिन्दी-उपन्यास के विकास-क्रम पर प्रकाश डालिए।

अथवा

नई कहानी के प्रमुख रचनाकारों का उल्लेख करते हुए नई कहानी की मुख्य विशेषताएं लिखिए। (9)

2. हिन्दी संस्मरण साहित्य के विकास की रूपरेखा स्पष्ट कीजिए।

अथवा

पाठ्यक्रम में निर्धारित किसी एक संस्मरणात्मक रचना का परिचय दीजिए। (9)

P.T.O.

3. निम्नलिखित तीन वर्गों से **किसी एक वर्ग** के प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

वर्ग – (क)

(i) दिए गए अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :-

बात वास्तव में यह है कि पुरूष कम बनाता या बिगाड़ता है। इसी तरह पुरूष कुछ नहीं बिगाड़ता, जो कुछ बनाती और बिगाड़ती है स्त्री ही। स्त्री ही व्यक्ति को बनाती है, घर को - - - कुटुम्ब को बनाती है; जाति और देश को भी, मैं कहता हूँ, स्त्री ही बनाती है। फिर उन्हें बिगाड़ती भी वही है। आनन्द भी वही और कलह भी; ठहराव भी और उजाड़ भी, दूध भी और खून भी; रोटी भी और स्कीमें भी और फिर अपनी मरम्मत और श्रेष्ठता भी, - - - सब कुछ स्त्री ही बनाती है। धर्म स्त्री पर टिका है, सभ्यता स्त्री पर निर्भर है, और फैशन की जड़ भी वही है।

अथवा

जिस बात को मानकर दुनिया खड़ी है, जिस दुनिया की कीली को हम और तुम नहीं बदल सकते, उसको हिलाने की कोशिश करने के बजाय हम मजबूत करने में सचेष्ट हों तो ज़्यादे कार्य कर सकते हैं। और वह आधारभूत तत्व की बात यह है कि कोई नितांत स्वतन्त्र नहीं, सब ही उत्तरदायित्वों में बंधे हुए हैं। उन्हीं में उनका मोक्ष और कृतार्थता है। (9)

(ii) परख उपन्यास के आधार पर सत्यधन की चारित्रिक विशेषताएं लिखिए।

अथवा

परख उपन्यास के माध्यम से विधवा-जीवन की विषमताओं पर विचार कीजिए। (15)

वर्ग – (ख)

(i) दिए गए अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :-

स्त्री-पुरूष का पारस्परिक प्रेमसम्बन्ध सहज स्वाभाविक है। वह वार-वधू के लिए नाटक और कुल-वधू के लिए एक चिन्त्य पहेली क्यों बन जाता है ? सूर्य के प्रकाश को किसी के लिए दिन और किसी के लिए रात क्योंकर बतलाया जा सकता है ? जीवन में बहुत बड़ी ठोकर खाकर भी चेलम्मा अपनी नयी जवानी के काल से उठते हुए इस महाहलचल-भरे प्रश्न का उत्तर अब तक अपने अन्दर न ढूँढ पायी थी, फिर भी उस उत्तर की खोज में जो अपार कष्ट उसने सहे थे वे उसे कहीं पर बुरी तरह थका चुके थे।

अथवा

बेटा! सदा ध्यान रखना, व्यापारी वस्तुओं से खेलता है उनका दास नहीं बनता। जिस धन को वह मोहान्ध होकर चाहता है उसे भी प्राणों का संकट आने पर बिना उदास हुए तृणवत् छोड़

देता है। प्राणों से अधिक वह अपनी साख चाहता है, साख के लिए प्राण निछावर करता है। व्यापारी सदा भूल को संभालता है। ब्याज का फैलाव घटता-बढ़ता और लुटता भी रहता है। प्रसंग आने पर बुद्धिमान उसकी चिन्ता छोड़ देते हैं।

(ii) माधवी अथवा कन्नगी के चिरत्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

वर्ग – (ग)

(i) दिए गए अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :-

ऊँचे ओहदों पर होने से वे आम लोगों की निगाह में अपने घरवालों का रुतबा बिना किसी कोशिश के बढ़वा चुके थे। किस ग़रीब की ज़मीन बिकनेवाली है, कौन निपूता कितनी जायदाद छोड़कर मरा है, नाबालिग़ लड़केवाली किस विधवा की क्या हैसियत है, शादी या श्राद्ध के मौकों पर कौन-सा काश्तकार कितनी रक़म कर्ज़ लेगा, मुकदमा लड़नेवाले कौन-कौन से लोग अदालती खर्च के लिए अपने खेतों को रेहन रखना चाहते हैं- इस प्रकार के तथ्यों की आवश्यक जानकारी के अतिरिक्त गाँव की बाकी बातों में उन्हें ज़रा भी रस नहीं मिलता।

अथवा

मालिक, ढाका-राजशाही की पीतांबरी और नागपुर की रेशमी धोतियों का अंबार लगा है आपके घर में, मेरी भला क्या औक़ात है कि हुज़ूर के पैरों पर अपना माथा भी रख सकूँ? मगर

है कि हुजूर के पैरों पर अपना माथा भी रख सकूँ ? मगर कहावत है कि बंभोला को आकधतूर ! जिसकी मोल कौड़ी भी नहीं, मदार और धतूर का वही फूल शंकरजी को पसंद आता है; कमल, चम्पा, जुही, केवड़ा और हरसिंगार के फूल शिवजी के लिए ज़रा भी आकर्षण नहीं रखते ।

(ii) 'बाबा बटेसरनाथ' की उपन्यास-कला पर विचार कीजिए ।

अथवा

'बाबा बटेसरनाथ' उपन्यास में चित्रित अकाल की भीषण स्थिति का वर्णन कीजिए ।

4. किसी एक अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :-

(क) कृषक-बालिका के शुभ्र भाल पर श्रमकणों की भी कमी न थी । वे सब बरौनियों में गुँथे जा रहे थे । सम्मान और लज्जा उसके अधरों पर मंद मुस्कुराहट के साथ सिहर उठते, किंतु महाराज को बीज देने में उसने शिथिलता न दिखाई । सब लोग महाराज का हल चलाना देख रहे थे । विस्मय से, कुतूहल से । और अरूण देख रहा था कृषक कुमारी मधूलिका को । आह कितना भोला सौंदर्य ! कितनी सरल चितवन !

अथवा

मुझे ऐसा मालूम होता था कि ठीक इस समय आशुतोष को हमें अपनी सहानुभूति से वंचित नहीं करना चाहिए, बल्कि कुछ अतिरिक्त स्नेह इस समय बालक को मिलना चाहिए । मुझे यह एक

ने चोरी की है तो उसका इतना दोष नहीं है, बल्कि यह हमारे ऊपर बड़ा भारी इलज़ाम है। बच्चे में चोरी की आदत भयावह हो सकती है लेकिन बच्चे के लिए वैसी लाचारी उपस्थित हो आई, यह और भी कहीं भयावह है। यह हमारी आलोचना है। हम उस चोरी से बरी नहीं हो सकते। (8)

5. कहानी-कला के आधार पर 'नमक का दारोगा' **अथवा** 'परदा' कहानी की समीक्षा कीजिए। (10)

6. 'प्रसाद' विषयक संस्मरण के आधार पर जय शंकर प्रसाद के चरित्र की विशेषताएं लिखिए।

अथवा

'नाट्य-सम्राट पृथ्वीराज कपूर' नामक पाठ की संस्मरणात्मक विधा के आधार पर समीक्षा कीजिए। (15)